अध्याय 39

परमेश्वर का पहला संदेश (भाग 2)

38:39-41 की तरह अध्याय 39 में यहोवा अय्यूब से प्रकृति तथा पशुओं के विषय में प्रश्न पूछ रहा था। इन प्रश्नों से अय्यूब की आज्ञानता का तो पता चला ही, साथ ही परमेश्वर के सर्वशक्तिमान तथा सर्वज्ञानी होने का भी पता चला।

प्रकृति और जीव जंतुओं का उसका प्रबन्ध (39:1-30)

जंगली बकरियां (39:1-4)

[1]''क्या तू जानता है कि पहाड़ पर की जंगली बकरियाँ कब बच्चे देती हैं? या जब हरिणियाँ बियाती हैं, तब क्या तू देखता रहता है? [2]क्या तू उनके महीने गिन सकता है? क्या तू उनके बियाने का समय जानता है? [3]जब वे बैठकर अपने बच्चों को जनतीं, और अपनी पीड़ा से छूट जाती हैं? [4]उनके बच्चे हृष्टपुष्ट होकर मैदान में बढ़ जाते हैं; वे निकल जाते और फिर नहीं लौटते।''

आयतें 1-4. यहोवा ने अय्यूब से **पहाड़ पर की जंगली बकरियां** तथा **हरिणियों** के बच्चे जनने के तरीकों के बारे में पूछा। ''पहाड़ी बकरियां'' का अनुवाद ''पहाड़ पर की जंगली बकरियां'' (KJV; ASV) या ''चट्टान'' भी हो सकता है। इन पशुओं को आम तौर पर न्यूबियन आई-बेक्स कहा जाता है जो मृत सागर के पश्चिमी तट पर एनगेदी तथा कुमरान के इलाकों में पाए जाते हैं। ''हरिणियां'' जंगली हिरण को कहा गया हो सकता है या यह शब्द केवल ''हिरणी'' (पहाड़ी मादा बकरियां) के लिए हो सकता है।

अय्यूब को इन जंगली जानवरों के गर्भकाल की कोई जानकारी नहीं थी। आखिर वे बिना किसी आदमी की मदद के **बयाती** और **अपने बच्चों को जनती**। **''उनके बच्चे हृष्टपुष्ट होकर मैदान में बढ़ जाते हैं; वे निकल जाते और फिर नहीं लौटते।''** परमेश्वर ने अपने जीव जंतुओं के भीतर उनके प्रजनन तथा वृद्धि के लिए आवश्यक प्रबन्ध करने के लिए उनमें सहज ज्ञान दिया।

जंगली गधा (39:5-8)

[5]''किसने बनैले गदहे को स्वाधीन करके छोड़ दिया है? किसने उसके बंधन खोले हैं? [6]उसका घर मैं ने निर्जल देश को, और उसका निवास लोनिया भूमि को ठहराया है। [7]वह नगर के कोलाहल पर हँसता, और हाँकनेवाले की हाँक सुनता भी नहीं। [8]पहाड़ों पर जो कुछ

मिलता है उसे वह चरता, और सब भाँति की हरियाली ढूँढ़ता फिरता है।''

आयत 5. अब परमेश्वर ने अय्यूब से **बनैले गदहे के सम्बन्ध में पूछा**। विलियम डी. रेबर्न ने लिखा है, ''आयतें 5–8 में लेखक जंगली गधे को पालतू गधे के रूप में देखता मानता है। नगर की दासता से छूट देकर, स्वतन्त्रता दी गई है।''[1] किसी मनुष्य ने जंगली गधे के **बंधन** नहीं **खोले** थे। इसके बजाय परमेश्वर ने ही उसे **स्वाधीन** किया था यानी परमेश्वर ने उसके मन को स्वतन्त्र बनाया था। एच. एच. रोअले ने टिप्पणी की है, ''जंगली गधा इतना तेज है कि केवल सबसे तेज घोड़े ही उसकी रफ़्तार की बराबरी कर सकते हैं।''[2]

आयत 6. जंगली गधे के निवास के रूप में परमेश्वर ने **निर्जल देश** (*ᵃrabah, अराबाह*) भी उपलब्ध करवाई थी (24:5; देखें यिर्मयाह 2:24)। रॉबर्ट एल. ऐल्बर्ट ने लिखा है कि *ᵃrabah* (*अराबाह*) ''आज भी उस गड़हे के लिए इस्तेमाल होता है जो मृत सागर से लेकर अकाबा की खाड़ी तक फैला है'' और ''अरब नाम का मूल यही है।''[3] ''निर्जल देश'' को **लोनिया भूमि** भी कहा गया है, यानी वह स्थान जो बीहड़ और वीरान है (भजन संहिता 107:33, 34; यिर्मयाह 17:6)। यह विवरण मृत सागर के दक्षिणी मैदानों के लिए उपयुक्त है, जिसे खारा ताल या अराबा का ताल भी कहा गया है (उत्पत्ति 14:3; व्यवस्थाविवरण 3:17; यहोशू 3:16; 12:3)।

आयत 7. जंगली गधा **नगर के कोलाहल पर हँसता**। जंगली जीव होने के कारण वह शहरी जीवन के शोर–शराबे तथा व्यस्तता को सहन नहीं कर सकता। वह पालतू गधे की तरह जो बोझ उठाने वाले जीव का काम करता है, **हाँकनेवाले की हाँक सुनता भी नहीं**।

आयत 8. ''पहाड़ों पर जो कुछ मिलता है उसे वह चरता, और सब भाँति की हरियाली ढूँढ़ता फिरता है।'' अपनी स्वतन्त्रता का मोल जो जंगली गधे को चुकाना पड़ता है वह यह है कि उसे भोजन ढूंढ़ना पड़ता है (24:5; भजन संहिता 104:10, 11; यिर्मयाह 14:6)। सेमूएल कॉक्स ने लिखा है, ''कवि ने इस सुन्दर जीव के सबसे विशेष गुणों पर बल दिया है; उसका अड़ियल स्वभाव, उसका मनुष्य की आज्ञा न मानना, अपने पसंदीदा भोजन के लिए उसकी लम्बी चौड़ी तलाश।''[4]

जंगली सांड (39:9–12)

9''क्या जंगली साँड़ तेरा काम प्रसन्नता से करेगा? क्या वह तेरी चरनी के पास रहेगा? 10क्या तू जंगली साँड़ को रस्से से बाँधकर रेघारियों में चला सकता है? क्या वह नालों में तेरे पीछे पीछे हेंगा फेरेगा? 11क्या तू उसके बड़े बल के कारण उस पर भरोसा करेगा? या जो परिश्रम का काम तेरा हो, क्या तू उसे उस पर छोड़ेगा? 12क्या तू उसका विश्वास करेगा कि वह तेरा अनाज घर ले आए, और तेरे खलिहान का अन्न इकट्ठा करे?''

आयत 9. जंगली साँड़ शक्तिशाली, जंगली जानवर का एक और उदाहरण है जो मनुष्य के वश में नहीं है (गिनती 23:22; व्यवस्थाविवरण 33:17; भजन संहिता 92:10)। जॉन ई. हार्टले ने कहा है,

आगे की ओर तीखे लम्बे सींगों वाला छह फुट से अधिक चौड़े कंधों वाला यह विशाल सांड़ जिसकी चमड़ी गहरी भूरी या काली होती है, बहुत बड़ा होता है। इसके सींगों की ज़बर्दस्त शक्ति इस जानवर को और भी खूंखार बना देती है (तुलना गिनती 23:22; 24:8; भजन संहिता 22:22 [21])।[5]

परमेश्वर ने अय्यूब से पूछा कि बता कि क्या जंगली सांड़ उसका **काम प्रसन्नता से करेगा** या उसकी **चरणी के पास रहेगा?** इन प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर यही है कि नहीं।

आयत 10. अय्यूब **जंगली साँड़ को रस्से से बाँधकर रेघारियों में चला सकता** था, न ही इस जंगली जानवर ने अय्यूब को **नालों में पीछे पीछे** फिरना था। अन्य शब्दों में अय्यूब इस जंगली जानवर को अपने खेतों में हल चलाने या हेंगा फेरने के लिए जोत पाता था। वह कोई ऐसा जानवर नहीं है जिसे सिद्धाया जा सके। हेंगा फेरने के समय जानवर ''भूमि को समतल करने के लिए भारी लट्ठे [या ऐसी किसी चीज़] को खींचता'' है (CEV)। **तेरे पीछे पीछे** इस बात का संकेत है कि जानवर ने किसान के पीछे पीछे चलना था। आल्डन ने लिखा है, ''जंगली सीगों वाले सांड़ चाहे वह हल [या हेंगा] ही खींच क्यों न रहा हो, के आगे आगे चलने के लिए या तो बड़ी हिम्मत चाहिए या फिर अति साहसिक भरा भरोसा।''[6]

आयतें 11, 12. जंगली सांड़ की तारीफ **उसके बड़े बल** के कारण की गई, परन्तु खेतीबाड़ी में **परिश्रम** के लिए उस पर **भरोसा** नहीं किया जा सकता था। पालतू बनाए गए गधे आम तौर पर कटे हुए **अनाज** को खेतों से **खलिहान** तक ले जाते थे। पालतू बनाए गए बैलों का इस्तेमाल आम तौर पर अनाज को दावने के लिए (व्यवस्थाविवरण 25:4), कई बार दावने वाले यन्त्र को ले जाने के लिए किया जाता था (यशायाह 41:15)। जंगली सांड इनमें से किसी काम के लिए उपयुक्त नहीं था।

शुतरमुर्गी (39:13-18)

[13]''फिर शुतुरमुर्गी अपने पंखों को आनन्द से फुलाती है, परन्तु क्या ये पंख और पर स्नेह को प्रगट करते हैं? [14]क्योंकि वह तो अपने अण्डे भूमि पर छोड़ देती और धूलि में उन्हें गर्म करती है; [15]और इसकी सुधि नहीं रखती कि वे पाँव से कुचले जाएँगे, या कोई वनपशु उनको कुचल डालेगा। [16]वह अपने बच्चों से ऐसी कठोरता करती है कि मानो उसके नहीं हैं; यद्यपि उसका कष्ट अकारथ होता है, तौभी वह निश्चिन्त रहती है; [17]क्योंकि परमेश्वर ने उसको बुद्धिरहित बनाया, और उसे समझने की शक्ति नहीं दी। [18]जिस समय वह भागने के लिये अपने पंख फैलाती है, तब घोड़े और उसके सवार दोनों को कुछ नहीं समझती है।''

आयत 13. शुतुरमुर्गी एक आकर्षित पक्षी है। पक्षियों में से यह सबसे बड़ा है। मुर्गा आठ फुट तक ऊंचा और तीन सौ से अधिक पौंड भारी हो सकता है। यह **अपने पंखों को आनन्द से फुलाती है, परन्तु क्या ये पंख और पर स्नेह को प्रगट करते हैं?** परन्तु उड़ने के लिए वे बेकार हैं। मुर्गा अपने पंख संगम के लिए मुर्गी को आकर्षित करने के लिए फैलाता है।[7]

कई संस्करणों में इस आयत अनुवाद में अंतर है। ''स्नेह'' या ''करुणा'' के बजाय आम तौर पर *ch^{a}sidah* (*चसीदा*) का अनुवाद ''सारस'' हुआ है (TEV; NIV; NJB; NJPSV;

NCV; NLT)। सारस को *चसीदा* चासीदाह, कहा जाता है क्योंकि यह अपने बच्चों के साथ अच्छा और ''स्नेह रखने वाला'' है।[8] इस प्रकार से शुतुरमुर्ग और सारस के बीच अंतर बताया जाता है। उदाहरण के लिए NIV में है, ''शुतुरमुर्ग के पंख आनंद से फूलते हैं जबकि सारस के परों और पंखों का मुकाबला नहीं कर सकते।''

आयतें 14, 15. कई बार शुतुरमुर्गी के अंडे जमीन पर यूं ही पड़े रहते है जिस कारण डर रहता है कि **कोई वनवशु उनको कुचल डालेगा**। मेरविन एच. पोप ने लिखा है, ''अंडे सेने के लिए मुर्गी और मुर्गा दोनों बारी-बारी से उन पर बैठते हैं, रात के समय मुर्गा सूर्य ढलने पर बैठता है जब उसके घने पंख मुर्गी के पंखों से कम स्पष्ट होते हैं।''[9] दिन के समय मुर्गी **धूलि में उन्हें गर्म करती है**। भोजन की तलाश में जब भी वह अंडे छोड़कर जाती है वे वह उन्हें रेत में दबा देती है और वे सूर्य की रौशनी में सेते हैं।

आयत 16. शुतुरमुर्गी कई बार **अपने बच्चों से ऐसी कठोरता करती है कि मानो उसके नहीं हैं**। यह अवलोकन विलापगीत 4:3 में भी किया गया है: ''परन्तु मेरे लोगों की बेटी वन के शुतुरमुर्गों के तुल्य निर्दयी हो गई है।'' लेन डब्ल्यू. प्रोवन ने बताया है,

> निश्चय ही *शुतुरमुर्गों* के व्यवहार के कुछ ऐसे पहलू हैं जिनके कारण शावकों के प्रति क्रूरता के लिए प्राचीनकाल के लोगों के बीच उनका नाम लिया जाता होगा। उदाहरण के लिए वातावरण की कुछ परिस्थितियों में चूजों के कुछ हफ्तों के होने पर परिवार टूट जाता होगा, व्यस्क दोबारा से यौनिक गतिविधि शुरू करके सभी शावकों के प्रति अत्यधिक आक्रामक हो जाते होंगे। माता-पिता के पास से थोड़ी संख्या में उड़ जाने वाले चूज़ों को आम तौर पर बाहरी माना जाता और उन्हें अकेले रहना पड़ता है।[10]

आयत 17. परमेश्वर ने सब जीव जंतुओं को **बुद्धि** और **समझने की शक्ति** एक सी नहीं दी है; उसने शुतुरमुर्ग को बहुत समझ नहीं दी। अरबियों के बीच में एक कहावत है ''शुतुरमुर्ग से भी बड़ा मूर्ख।''[11]

आयत 18. बुद्धि की जगह परमेश्वर ने शुतुरमुर्ग को रफ़्तार की आशीष दे दी। शुतुरमुर्ग पचास मील प्रति घंटा की रफ़्तार से भाग सकता है और इस प्रकार यह **घोड़े ओर उसके सवार** से आगे निकल सकता है।[12] '''शुतुरमुर्ग से तेज' रफ़्तार से शिखर के लिए एक अरबी अभिव्यक्ति है।''[13]

घोड़ा (39:19-25)

[19]''क्या तू ने घोड़े को उसका बल दिया है? क्या तू ने उसकी गर्दन में फहराती हुई अयाल जमाई है? [20]क्या उसको टिड्डी के समान उछलने की शक्ति तू देता है? उसके फुँक्कारने का शब्द डरावना होता है। [21]वह तराई में टाप मारता है और अपने बल से हर्षित रहता है, वह हथियारबन्दों का सामना करने को निकल पड़ता है। [22]वह डर की बात पर हँसता, और नहीं घबराता; और तलवार से पीछे नहीं हटता। [23]तर्कश और चमकता हुआ सांग और भाला उस पर खड़खड़ाता है। [24]वह रिस और क्रोध के मारे भूमि को निगलता है; जब नरसिंगे का शब्द सुनाई देता है तब वह रुकता नहीं। [25]जब जब नरसिंगा बजता तब तब वह हिन हिन करता है, और लड़ाई और अफसरों की ललकार और जय-जयकार को दूर से सूँघ लेता है।''

आयत 19. आयत 18 के "घोड़े और उसके सवार" वाली तुलना से एक आसान बदलाव आयत 19 के आरम्भ से **घोड़े** की चर्चा पर हो जाता है। यहां पर जिस घोड़े की बात की है वह स्पष्ट जंगी घोड़ा है। अय्यूब न तो जंगी घोड़े के **बल** और न ही उसकी **गरदन** में फैराती **अयाल** का श्रेय ले सकता था। इसके विपरीत उसे ये सब चीज़ें परमेश्वर ने दी थी। मिस्र में यूसुफ के शासन के दौरान घोड़े का बाइबल का सबसे पुराना हवाला उत्पत्ति 47:17 का है।

आयत 20. जंगी घोड़े की फुर्ती की तुलना **टिड्डी** की फुर्ती से की गई है। बाइबल में और जगहों पर घोड़ों और टिड्डियों के बीच समानताओं का उल्लेख मिलता है (यिर्मयाह 51:27; योएल 2:4; प्रकाशितवाक्य 9:7)। घोड़े का **फुंकारने का शब्द डरावना** होता है यानी यह शत्रु के मन में डर पैदा कर देता है (यिर्मयाह 8:16)।

आयतें 21, 22. तराई वह जगह होती थी जहां सेना युद्ध के लिए इकट्ठा होती थी (उत्पत्ति 14:8; 1 शमूएल 17:2; यशायाह 22:7)। हमला करने के लिए तैयार जंगी घोड़ा जमीन पर **टाप मारता है** और वह पीछे नहीं मुड़ सकता। अच्छी तरह से सिधाया गया होने के कारण वह युद्ध में फुर्ती से आगे बढ़ता है, वह किसी ने नहीं डरता, चाहे वह शत्रु की **तलवार** ही हो। आल्डन ने लिखा है, "चाहे यह कोई जंगली जानवर नहीं है, परन्तु यहां पर जिस घोड़े का वर्णन है वह नियंत्रण से बाहर होने के कगार पर ही है।"[14]

आयत 23-25. जंगी घोड़ा युद्ध के दृश्यों से या शोर की आवाज़ों से डरता नहीं है (देखें नहूम 3:2, 3), जिसमें उसके अपने सवार द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले हथियार भी हैं (देखें TEV; NCV)। **तर्कस** तीरों से **खड़खड़ाता है**। **चमकते हुए सांग और भाले** में से सूर्य की किरणें निकलती हैं। रेबर्न ने लिखा है, "*सांग* लकड़ी के लम्बे दस्ते पर लगा तीखा गंडासा है। *भाला* तेजी से आगे बढ़ रहे घोड़े पर सवार शत्रु के ऊपर फैंकने के लिए बनाया गया हलका भाला है।"[15]

"वह रिस और क्रोध के मारे भूमि को निगलता है।" यह "तेजी से दौड़ रहे घोड़े" के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है (देखें नहूम 3:2, 3), जिसमें उसके अपने सवार द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले हथियार भी हैं (देखें KJV; ASV; NJPSV; NRSV)।[16] **"जब नरसिंगे का शब्द सुनाई देता है तब वह रुकता नहीं।"** "नरसिंगा" (*shopar, शोपार*) शब्द युद्ध का संकेत देने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले भेड़ के सींग को कहा गया है (यहोशू 6:4, 5; न्यायियों 3:27; 6:34; यिर्मयाह 4:19; सपन्याह 1:16)।

"जब जब नरसिंगा बजता तब तब वह हिन हिन करता है।" यह भाषा "द्रोह भरे आनन्द को जताती है"[17] (भजन संहिता 35:21, 25; 40:15; यशायाह 44:16; यहेजकेल 25:3; 26:2; 36:2)। NJB में कहा गया कि वह "उल्लासित होकर हिन हिनाता है।" **"और लड़ाई और अफसरों की ललकार और जय-जयकार को दूर से सूँघ लेता है।"** होमेर हेली ने निष्कर्ष निकाला, "यह शान और यह समझ तथा सहज प्रवृति उसे न तो मनुष्य की ओर से और न विकास की प्रक्रिया के मिले, बल्कि यह उसके सृजनहार की सामर्थ और बुद्धि का प्रदर्शन है।"[18]

बाज और उकाब (39:26-30)

[26]"क्या तेरे समझाने से बाज उड़ता है, और दक्षिण की ओर उड़ने को अपने पंख फैलाता है? [27]क्या उकाब तेरी आज्ञा से ऊपर चढ़ जाता है, और ऊँचे स्थान पर अपना

घोंसला बनाता है? [28]वह चट्टान पर रहता और चट्टान की चोटी और दृढ़ स्थान पर बसेरा करता है। [29]वह अपनी आँखों से दूर तक देखता है, वहाँ से वह अपने अहेर को ताक लेता है। [30]उसके बच्चे भी लहू चूसते हैं; और जहाँ घात किए हुए लोग होते वहाँ वह भी होता है।''

आयत 26. अय्यूब के **समझाने** (*binah, बीनाह*) पर ज़ोर दिया जाना यहोवा के पहले संदेश को कोष्ठक में रखने का काम करता है (38:4; 39:26)। **बाज** (*nets, नेटस*) ''शिकारा'' को कहा गया हो सकता है।[19] **दक्षिण की ओर** पक्षी के शरद् ऋतु में दक्षिण की ओर उड़ जाने तथा बसंत के मौसम में लौट आने के प्रवासी होने का संकेत हो सकता है।

आयतें 27, 28. ''क्या उकाब तेरी आज्ञा से ऊपर चढ़ जाता है, और ऊँचे स्थान पर अपना घोंसला बनाता है?'' पुराने नियम में ''उकाब'' का उल्लेख कई बार हुआ है। आकाश में ऊंचा उड़कर ''ऊंचे स्थान पर'' वह अपनी शान दिखाता है (नीतिवचन 23:5; यशायाह 40:31)। बुद्धिमान ने कहा कि चार सबसे अद्भुत बातों में से एक जिसे समझना सबसे अधिक कठिन है वह ''आकाश में उकाब पक्षी का मार्ग'' है (नीतिवचन 30:19)। वह ''पहुंच से बाहर स्थान'' में ''अपना घोंसला बनाता है'' प्रतीकात्मक अर्थ में ''तारागण के बीच'' (ओबद्याह 4)। बुद्धि रहित शुतुरमुर्गी के उलट जो अपने अंडे ज़मीन पर छोड़ देती है (39:14, 15), उकाब का घोंसला बड़ी समझदारी से किसी भी खतरे से दूर रखा जाता है।

''चट्टान की चोटी और दृढ़स्थान पर बसेरा करता है।'' ''चट्टान'' और ''चोटी'' दोनों का अनुवाद एक ही इब्रानी शब्द (*sela', सेला*) से किया गया है। एदोम में सेला नामक एक जगह थी (2 राजाओं 14:7), और इसे आम तौर पर पेत्रा कहा जाता है। चट्टान की बनावट के आकार के कारण ''चट्टान'' (*shen, शेन*) शब्द मूलतया ''दांत'' है। और ''दृढ़स्थान'' का अनुवाद इब्रानी शब्द *m^{e}tsudah* (*मेसुडाह*) से किया गया है। मृत सागर के पास हेरोदेस महान के पहाड़ी वाले किले को इसी नाम, मसागा से जाना जाता था।

आयतें 29, 30. ''वह अपनी आँखों से दूर तक देखता है, वहाँ से वह अपने अहेर को ताक लेता है।'' इसी विशेषता से हमें ''सरसरी नज़र'' और ''बाज की आंख'' शब्द मिले हैं।[20] उकाब की इतनी ऊंचाई से, वह फुर्ती से अपने शिकार ''को पकड़ने के लिए तेजी से झपटा मारता'' (हबक्कूक 1:8; देखें व्यवस्थाविवरण 28:49; अय्यूब 9:26; यिर्मयाह 49:22)। **''उसके बच्चे भी लहू चूसते हैं।''** उकाब अपने बच्चों के लिए प्रबन्ध करता है (38:41 पर टिप्पणियां देखें)। **''और जहाँ घात किए हुए लोग होते वहाँ वह भी होता है।''** उकाब का भोजन ''घात किए हुए'' (*chalal, चालाल*) अर्थात वे लोग होते हैं जो बुरी तरह से घायल किए गए हैं। यह यीशु की बात के साथ मेल खाता है ''जहां लोथ हो, वहीं गिद्द इकट्ठे होंगे'' (मत्ती 24:28)।

प्रासंगिकता

पशु जगत के लिए परमेश्वर का राज्य (38:39–39:30)

अपने पहले संदेश को जारी रखते हुए यहोवा अय्यूब से आकाश और पृथ्वी के प्रश्न पूछने से पशु जगत के बारे में प्रश्न पूछने लगा (38:39–39:30)। घोड़े को छोड़ सब पशु जिनका

उल्लेख किया गया है वह जंगली हैं। परन्तु घोड़े का वर्णन तेज जंगी घोड़े के रूप में किया गया, सो यह भी जंगली ही हो सकता है। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के जंगली जानवरों के प्रति जिन पर अय्यूब ने शायद ही कभी विचार किया हो, अपनी चिंता और लगाव जताया। आज बहुत से लोगों को इन जानवरों से भी आगे निकाल दिया जाता है। उनके बारे में वे तभी विचार करते हैं जब चिड़ियाघर में जाते या प्रकृति पर कोई शो देख रहे होते हैं। फिर भी परमेश्वर उनका ध्यान रखता और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

सिंह और कौवा (38:39-41)। परमेश्वर ने कौवे जैसे महत्वहीन पक्षियों के साथ जंगल के राजा शेर के प्रति भी अपना लगाव दिखाया है उसने उसे स्वभाविक सहजबुद्धि भी दी जिससे वह अपने बच्चों को खिलाने के लिए शिकार कर सके। यीशु ने छोटे-से-बड़े कौवे का इस्तेमाल किया। उसने कहा, ''कौवों पर ध्यान दो; वे न बोते हैं, न काटते; न उनके भण्डार और न खत्ता होता है; तौभी परमेश्वर उन्हें पालता है। तुम्हारा मूल्य पक्षियों से कहीं अधिक है!'' (लूका 12:24)।

पहाड़ी बकरियां (39:1-4)। परमेश्वर पहाड़ी बकरियों पर निगरानी रखता है जब वे अपने बच्चों को जन्म देती हैं। इन बच्चों का जन्म होता है और फिर वह बिना मनुष्य की सहायता के बड़े होते हैं; परमेश्वर ने उन्हें वह स्वभाविक सहजबुद्धि दी है जो उनके लिए ज़िंदा रहने के लिए आवश्यक है।

जंगली गधा (39:5-8)। जंगली गधे को फुर्ती देने के साथ साथ स्वतन्त्र सोच परमेश्वर की ओर से ही दी गई है। जंगली गधे के लिए रहने के लिए निर्जन आवास भी परमेश्वर ने ही दिया। वहां पर जानवर खाने के लिए पौधों की तलाश करते हैं।

जंगली सांड़ (39:9-12)। परमेश्वर जंगली सांड़ पर भी अधिकार रखता है चाहे मनुष्य उसे पालतू नहीं बना सकता। इस जंगली जानवर को खेती बाड़ी के काम के लिए पालतू नहीं बनाया जा सकता। उसके बल और लम्बे सींगों का ध्यान करते हुए कोई भी किसान उसे आंकने की कोशिश नहीं करता।

शुतुरमुर्ग (39:13-18)। परमेश्वर ने सबसे बड़े पक्षियों में शुतुरमुर्ग को बहुत समझ नहीं दी। कई बार शुतुरमुर्ग के अंडे बिना रखवाली के पड़े रहते हैं इस कारण उन पर खतरा बना रहता है। कुछ परिस्थितियों में चूज़ों को परिवार से अलग कर दिया जाता है। फिर भी शुतुरमुर्ग चाहे समझदार नहीं है, परन्तु परमेश्वर ने उसे बड़ी रफ़्तार दी है।

जंगली घोड़ा (39:19-25)। युद्ध के घोड़े को बहादुरी और बल परमेश्वर की ओर से दिया गया है। युद्ध के दृश्य तथा शोर को देखकर डरे बिना यह जानवर निडरता से युद्ध में कूद पड़ता है। उसे चमचमाती हुई तलवारों और भालों का या नरसिंगे की आवाजों और अपनी ओर आते हुए तीरों से कोई डर नहीं लगता।

बाज और उक़ाब (39:26-30)। पहला संदेश बाज और उकाब के लिए परमेश्वर के प्रबन्ध के साथ खत्म होता है। परमेश्वर ने पक्षियों के बीच सर्दी के मौसम के वातावरण में दक्षिण को ओर चले जाने की समझ डाली है। यह बात बाज के लिए कही गई लगती है। उकाब पहाड़ों की चोटियों के ऊपर अपना घोंसला बनाता है। इस परीक्षण स्थल से वह अपने बच्चों को खिलाने के लिए अपने शिकार का पीछा करता है।

सारांश। अध्याय 38 वाले आकाश और पृथ्वी के सम्बन्ध में अपने प्रश्नों की तरह परमेश्वर

ने अध्याय 39 में पशु जगत के बारे में अपने प्रश्नों के द्वारा अय्यूब को शर्मसार किया। अय्यूब कोई जवाब नहीं दे पाया। सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने खड़ा होने पर उसे समझ में आया कि परमेश्वर की तुलना में उसे कितना कम ज्ञान था! डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 721. [2]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, दक्षिण कैरोलिना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 319. [3]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 384. [4]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 523. [5]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 508. [6]आल्डन, 385. [7]द *जॉन्डरवन पिक्टोरियल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ द बाइबल,* सम्पा. मेरिल सी. टेनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडवन पब्लिशिंग हाउस, 1975), 4:551–52. [8]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 339. [9]मेरविन एच. पोप, *अय्यूब,* द एंकर बाइबल, अंक 15 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे ऐंड कंपनी, Inc., 1965), 260–61. [10]इयन डब्ल्यू. प्रोवन, *विलापगीत,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कॉमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1991), 112.

[11]पॉप, 262. [12]देखें ज़ीनोफोन *अनाबेसिस,* 1.5.2. [13]पॉप, 262. [14]आल्डन, 389. [15]रेबर्न, 732. [16]ब्राउन, ड्राइवर, ऐंड बिगस, 167. [17]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 346. [18]वहीं। [19]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:714. [20]आल्डन, 391.